सम्पादकीय

इस संयुक्तांक में राजस्थानी परंपरा से सम्बद्ध पुरा-दस्तावेजों, तत्कालीन संस्कृति, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की विवेचना के साथ-साथ शैक्षणिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत आलेखों द्वारा समादृत किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परंपरा के तहत प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। वर्तमान भारतीय इतिहास में मुख्य स्थान रखने वाली विभाजन की विभीषिका को भी आलेख के रूप में इस अंक में स्थान दिया गया है।

प्रस्तुत अंक में अग्रलेख के रूप में राजस्थान राज्य अभिलेखागार के मूल दस्तावेज़ों पर आधारित डॉ. राजेन्द्र कुमार के लिखे आलेख **'सासण बही: बीकानेर राज्य की दान बही'** को प्रकाशित किया है। दस पृष्ठों की यह एक छोटी-सी बही, मुख्य रूप से तो सतरहवीं, अठारहवीं व उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ तक के कालखंड के दौरान बीकानेर राज्य के शासकों द्वारा चारणों एवं भाटों को उनकी राज्य के प्रति सेवाओं के उपलक्ष्य में दान स्वरूप प्रदत्त गांवों का विस्तृत लेखा-जोखा है। किन्तु, गौणरूप से तत्कालीन राजनीतिक हलचल का भी यत्र-तत्र विवरण इसमें उपलब्ध हो जाता है। पंद्रहवीं सदी में राज्य में नए गाँवों व कस्बों का निर्माण तथा बीकानेर पर मुग़ल बादशाह बाबर के पुत्र कामरान द्वारा हमला किए जाने एवं उसमें असफल होकर भागते समय सुघा चारण परिवार द्वारा उसकी पाघ में लगे किरणिये के लूट लिये जाने का बड़ा ही रोचक वर्णन है। इसके अतिरिक्त राज्य में करणी माता को प्रदत्त दस गाँवों को मिलाकर वर्तमान देशनोक कस्बे का निर्माण तत्कालीन नगर निर्माण की प्रक्रिया एवं ऐतिहासिक तथ्य को दर्शाता है।

दूसरा आलेख श्री बुन्देला सिंह चौहान का है, जिसमें उन्होंने हिन्दी विश्वभारती की मुख्य शोध पत्रिका **विश्वम्भरा** की गत साठ वर्षों से वर्तमान तक की अकादमिक विकास यात्रा की ओर पाठकों का ध्यान केन्द्रित किया है। तीसरे आलेख में बिन्टू ने जोधपुर रियासतकालीन शिक्षण व्यवस्था के स्तर एवं विकास (1800 से 1947 ई.) का विस्तारपूर्वक ऐतिहासिक विवेचन किया है।

इसी क्रम में चौथा आलेख डॉ. विक्रम सिंह भाटी की रचना है, जो 'अमृत सागर' नामक आयुर्वेद ग्रन्थ की विश्लेषणात्मक विवेचना है। इस आलेख में डॉ. विक्रमसिंह भाटी ने प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति, आयुर्वेद, के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'अमृत सागर' का गहन विश्लेषण किया है। उन्होंने इस ग्रंथ के विभिन्न पहलुओं, जैसे औषधियों, उपचार विधियों, और स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण को विस्तार से

समझाया है। इस अध्ययन से आयुर्वेद के शास्त्रीय ज्ञान की आधुनिक समय में प्रासंगिकता को उजागर किया गया है।

धीर सिंह द्वारा लिखित पांचवें आलेख में 1930–1940 के दशक के दौरान जयपुर राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने इस अवधि में शिक्षा नीति, संस्थानों की स्थापना, और सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विस्तार को विश्लेषित किया है।

छठा आलेख डॉ. विक्रम सिंह अमरावत द्वारा लिखा गया है जिसका विषय 'गाँधी, साम्प्रदायिकता और विभाजन की पूर्व संध्या' है, उन्होंने इस लेख में गांधी जी के सांप्रदायिक सद्भाव के प्रयासों और उनके विचारों की विवेचना की है। इस आलेख से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी की नीतियाँ और उनके द्वारा किए गए प्रयास किस प्रकार विभाजन को रोकने में महत्वपूर्ण साबित हो सकते थे।

महेंद्र सिंह तंवर द्वारा लिखित सातवाँ आलेख 'दिल्ली के तोमरों का स्थापत्य कला में योगदान', तोमर वंश के शासकों द्वारा दिल्ली में किए गए स्थापत्य विकास पर केंद्रित है। इसमें उन्होंने किला रायपिथौरा, मंदिर निर्माण और जलस्रोतों की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण योगदानों का उल्लेख किया है, जो उस काल की स्थापत्य शैली को दर्शाते हैं। आठवें आलेख में डॉ. सुनीता बेनीवाल ने प्रौद्योगिकी नवाचारों के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता पर प्रभाव का विश्लेषण किया है। आलेख में पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों की तुलना करते हुए नवाचार के माध्यम से दक्षता, गुणवत्ता, और उत्पादन लागत में सुधार की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत अंक में **व्याख्यान दीर्घा** के अंतर्गत श्री विजय वर्मा द्वारा डॉ. दशरथ शर्मा की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर यह आलेख व्याख्यान स्वरूप प्रस्तुत किया गया था। इस अंक के पुस्तक समीक्षा खंड के अंतर्गत दो पुस्तकों को स्थान दिया गया है। प्रथमत: डॉ. सुखाराम ने डॉ. राजेन्द्र कुमार की सद्य प्रकाशित दस्तावेज़ी इतिहास पुस्तक '**अठारहवीं सदी: बीकानेर**' की समीक्षा प्रस्तुत की है। इसी अनुक्रम में डॉ. नितिन गोयल द्वारा डॉ. रश्मि मीना की पुस्तक **आधुनिक जयपुर के निर्माण का प्रमाणिक अध्ययन: 'जयपुर रियासत का आर्थिक इतिहास'** की विश्लेषणात्मक रूप से समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

इस सयुक्तांक में प्रकाशित सभी आलेख विश्वम्भरा पत्रिका के संपादक मण्डल के सदस्यों द्वारा अनुमोदित है।

संपादक